REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

धूमिल की काव्य चेतना

प्रा. डॉ. गजानन पोलेनवार
हिंदी विभाग प्रमुख , तायवाडे महाविद्यालय, महादूला कोराडी, नागपूर.

हिंदी साहित्य जगत में शायद ही कोई ऐसा होगा जो सुदामा पांण्डेय 'धूमिल' से अपरिचित हो । अपनी विशेष प्रकार की शैली, एवं प्रखर अभिव्यक्ति के लिए धूमिल जाने जाते हैं । उनकी कविता आम—बोलचाल की भाषा का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है । सरल—सहज अभिव्यक्ती के माध्यम से गहन भाव—बोध को धूमिल आसानी ये प्रस्तुत करते हैं । वस्तुत: वे अपने समकालीन समाज और साहित्य दोनों में जीते थे और उसके संदर्भ में अपना मंतव्य भी प्रस्तुत करते हैं । उनकी कविता इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण है । जब हम उनकी काव्ययात्रा से गुजरते हैं तब कहीं न कही उनके जीवन संघर्ष से भी परिचित होते हैं । उन्होंने अपने जीवन में जो संघर्ष किया उसे कविता के जरिए व्यक्त भी किया है । उनके संघर्ष एवं काव्य यात्रा के संदर्भ में राहुल कहते हैं — नौकरी की तलाश में कलकत्ता चले गए । जहॉ लोहा ढोने से लेकर लकड़ी ढोने तक और फिर अपनी ईमानदारी की बदौलत पासिंग ऑफीसर तक बढ़े किंतु वहॉ मजदूरों का शोषण और व्यापारी वर्ग की घिनौनी करतुतों ने धूमिल को चैन न लेने दिया । धनाढय — वर्ग की शोषण वृत्ती उन्हें सदा कचोटती थी ।''१ धूमिल अपनी काव्य यात्रा में पूरी ईमानदारी के साथ व्यक्त होते हैं और हम कविताओं के माध्यम से उनके जीवन संदर्भों को समझ सकते हैं । अत: उनकी कविताओं के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि उनकी कविताएँ उनके जीवन संघर्ष की देन है । यही कारण है किवे लोक—मन के साथ घूल—मिलकर लोक—मन की अभिव्यक्ति भी करते हैं । धूमिल नागार्जुन, मुक्तिबोध की तरह आम—जनता के प्रति प्रतिबध्द होते हैं । उनके काव्य में भी नागार्जुन की जन—चेतना है । प्रतिबध्दता है । वे अभिव्यक्ति के खतरे को उठाते ही नहीं वरन सवाल भी करते हैं । जनतंत्रकी वास्तविकता का पर्दाफाश करते हैं । अपने समय की पटकथा को प्रस्तुत करते हैं । मसलन उनकी कविता की कुछ पॅक्तियॉ देख सकते हैं । जो समसामयिक गतिविधीयों एवं जनतंत्र के वास्तविक चेहरे को दर्शाती हैं—

''मैने महसूस किया कि मैं वक्त के
एक शर्मनाक दौर से गुजॅर रहा हूँ
अब ऐसा वक्त आ गया है जब कोई
किसी का झुलसा हुआ चेहरा नहीं देखता हैं
अब न तो कोई किसी का खाली पेट
देखता हैं, न थरथराती हुई टॉगे
और न ढला हुआ 'सूर्यहीन कन्धा' देखता हैं

हर आदमी सिर्फ, अपना धन्धा देखता हैं
सबने भाईचारा भूला दिया हैं
आत्मा की सरलता को मारकर
मतलब के अंधेरे में (एक राष्ट्रीय मुहावरे की बगल में)
सुला दिया हैं ।''२

धूमिल अपनी कविताओं में समाज, राजनीति, संस्कृति इत्यादी शब्दों को अधिक महत्व देते हैं । अत: वे अपनी काव्ययात्रा के जरिए सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना का वहन करते है । समकालीन राजनीति के संदर्भ में वे कहते हैं—

''न कोई प्रजा हैं
न कोई तंत्र हैं
यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुलासा
षड्यंत्र है ।''३

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि समकालीन राजनीति के वास्तविक स्वरुप को दर्शाते ही नहीं बल्कि सामान्य मनुष्य को सचेत भी करते हैं । इस प्रकार की अभिव्यक्ति शायद ही किसी अन्य कविता में देखने को मिलती हैं । इस संदर्भ में राहुल कहते हैं कि ''सामाजिक चेतना के साथ—साथ राजनीतिक चेतना का इतना उपयुक्त सामंजस्य संभवत: मुक्तिबोध के बाद धूमिल के ही रचना संसार में देखने को मिलता है ।''४ वस्तुत: धूमिल अपनी काव्य यात्रा के जरिए विशिष्ट अभिव्यक्ति द्वारा संसद में चलनेवाली राजनीति को सड़क पर लाते ही नहीं अपितू समकालीन राजनीतिका वास्तविक चेहरा दिखाते हैं । जो सामान्य मनुष्य को झगझोर देता है । धूमिल गंभीर प्रश्नों को भी सहजता से अभिव्यक्त करते हैं । उनके व्यक्तित्व की पहचान आक्रोश है, इनका जीवन — संघर्ष हैं । धूमिल 'संसद से सड़क तक' काव्य संग्रह के आरंभ में कहते हैं—

''एक सही कविता
पहले
एक सार्थक वक्तव्य होती है ।''५

इस अर्थ में उनकी कविताएँ जीवन—अनुभूति की गहन पड़ताल ही नहीं करती वरन् उस चेतना की अभिव्यक्ति है जो जन—मन के भाव—बोध को आवृत्त करती है । ''धूमिल ने कविता को जहाँ सार्थक वक्तव्य तथा चेतावनी देनेवाली जागती आवाज स्वीकार किया है । वहाँ उसके शिल्प को महत्व न देकर कथ्य को महत्व दिया है ।''६ और आज भी साहित्य में कला की जगह कथा को अधिक महत्व दिया जाता है । धूमिल सजग—जागरुक कवि हैं । वे अपनी जरुरत के हिसाब से भाषा का चुनावकरते हैं । उनका सजग दृष्टिकोण समसामाजिक गतिविधियों को दर्शाता है । कवि परंपरागत रुढ़—प्रथाओं के ऐवज में नये दृष्टिकोण एवं परिवर्तनकारी चीजों को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं । वह परिवर्तन चाहे सामाजिक, सांस्कृतिक हो या राजनीतिक हो । धूमिल अपनी काव्य यात्रा के दौरान बार—बारसवालकरते हैं । शाषक वर्गको सवालों केघेरों में खड़ा करते हैं । उनकी 'बीस साल बाद' कविता आज भी महत्वपूर्ण लगती है । वह आज भी मौसम के मिजाज की पहचान कराती है । धूमिल कहते हैं—

''बीस साल बाद
मैं अपने—आप से सवाल करता हूँ
जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरुरत होती हैं ?

और बिना किसी उत्तर के चुपचाप
आगे बढ़ जाता हूँ
क्योंकि आजकल मौसम का मिजाज यूँ है
कि खून में उड़नेवाली पत्तियों का पीछा करना
लगभग बेमानी है ।''७

प्रस्तुत कविता में कवि अपने—आप से सवाल ही नहीं करते हैं' अपितु वर्तमान भयावहता की और भी संकेत करते हैं । कवि यथार्थ को दर्शाकर लोक—चेतना का बिजारोपन करते हैं । और सामान्य मनुष्य समाज में अपने स्थान एवं सामाजिक स्थिती को खोजता है । धूमिल की इस विशेषता के संदर्भ में कृष्ण कुमार कहते हैं —

''मेरे विचार से समकालीन हिंदी कविता में धूमिल पहला और अकेला ऐसा कवि है जो लोक—वेदना को अपनी कविताओं का विषय बनाता है और अपनी कविता के द्वारा फिर—फिर लोक—चेतना का आवाहन करता है ।''८ धूमिल की कविताएँ भ्रष्ट राजनीति के खिलाफ आक्रोश लेकर उभरती है । वे कविता को बौखलाए हुए व्यक्ति का संक्षिप्त एकालाप मानते हैं । उनकी कविता का उद्देश मनोरंजन करना नहीं है, वरन मानवीय चेतना को जगाना है । इस क्रम में धूमिल अपनी विशिष्ट पहचान निर्माण करते हैं । ''सामाजिक दायित्व और राजनीतिक समझ का यह कवि समाज में व्याप्त घिनौनी अव्यवस्थीत स्थितियों को अपनी कविताओं का विषय बनाता है और अपनी कविता द्वारा लोक चेतना का आवाहन करता है ।''९ विषमतामयी स्थिति में आज प्रत्येक व्यक्ति आहत है । अपनी बंदूक दूसरों पर ताने हुए हैं । ऐसी स्थिति में धूमिल की कविता आत्म सचेत करती है । कवि मानवता का पक्ष लेकर शाषित वर्ग के दु:खों को वाणी प्रदान करती है । उनकी पटकथा, मोचीराम, अकालदर्शन, शहरमें सूर्यास्त, प्रौढ़ शिक्षा आदि कविताएँ वर्तमान के भयावह सत्य से रुबरु कराती है । इस अर्थ में धूमिल की कविताएँ आझादी के लगभग सत्तर—वर्षो के बाद भी कालजयी बनी हुई हैं ।

१)विपक्ष का कवि धूमिल, पृ. १५, राहुल नीरज बुक सेंटर, प्रथम सं. १९९१, शाहदरा दिल्ली.
२) संसद से सड़क तक — धूमिल, पृ. १०८, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, दूसरी आवृत्ति २०११
३) सुदामा पांडे का प्रजातंत्र — धूमिल, पृ. २१, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण २००१
४)विपक्ष का कवि धूमिल — राहुल, पृ. ४३, नीरज बूक सेंटर, दिल्ली प्रथम सं. १९९१
५) संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ. ६, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, दु. आ. २०११
६) दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल, कृष्णकुमार, पृ. १६१, साहित्य निधी, दिल्ली, प्रथम सं. १९८७
७) संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ. ९, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, दूसरी आवृत्ति २०११
८) दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल, कृष्णकुमार, पृ. ५—६, साहित्य निधी, दिल्ली, प्रथम सं. १९८७
९) दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल, कृष्णकुमार, पृ. १६८, साहित्य निधी, दिल्ली, प्रथम सं. १९८७